कक्षा 12 –हिंदी+साहित्य हिंदी

कहानी से सम्बन्धित

प्रश्न 5 अंक

ध्रुव यात्रा कहानी का उद्देश्य (सामान्य हिंदी)

ध्रुव यात्रा कहानी जैनेंद्र कुमार जी द्वारा रचित है. ध्रुवयात्रा कहानी प्रारंभ से अंत तक कहानी ध्रुवयात्रा पर ही टिकी हुई है. इस कहानी का नायक रिपुदमन है तथा नायिका उर्मिला है, ध्रुवयात्रा कहानी का उद्देश्य इस प्रकार है--

प्रस्तुत ध्रुवयात्रा कहानी में कहानीकार जैनेन्द्र ने बताया है कि प्रेम एक पवित्र बन्धन है और विवाह एक सामाजिक बन्धन। प्रेम में पवित्रता होती है और विवाह में स्वार्थता। प्रेम की भावना व्यक्ति को उसके लक्ष्य तक पहुँचने में मदद करती है। उर्मिला कहती है, "हाँ, स्त्री रो रही है, प्रेमिका प्रसन्न है। स्त्री की मत सुनना, मैं भी पुरूष की नहीं सुनूंगी। दोनों जने प्रेम की सुनेंगे। प्रेम जो अपने सिवा किसी दया को, किसी कुछ को नहीं जानता।" निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि प्रेम को ही सर्वोच्च दर्शाना इस कहानी का मुख्य उद्देश्य है, जिसमें कहानीकार को पूर्ण सफलता मिली है।

पंचलाइट सारांश- 80 शब्द (सामान्य व साहित्यिक हिंदी)

'पंचालाइट' कहानी के लेखक फणीश्वरनाथ रेणु' जी हिन्दी - जगत् के सुप्रसिद्ध आंचलिक कथाकार हैं। 'पंचालाइट' भी बिहार के आंचलिक परिवेश की कहानी है। पंचलैट (पंचलाइट) कहानी के माध्यम से ग्रामवासियों की मनोस्थिति की वास्तविक झाँकी प्रस्तुत की है। इस कहानी में यह दर्शाया गया है कि किस प्रकार आवश्यकता बड़े-बड़े अवगुण या निषेध अथवा रूढ़िगत संस्कार को अनावश्यक सिद्ध कर देती है।

महतो टोली के लोग पंचलाइट खरीद तो लाते हैं, परन्तु जलाना नहीं जानते हैं। इस टोली के लिए यह अपमान की बात है। समस्या के समाधान के लिए मुमरी अपने प्रेमी गोधन जिसका हुक्का पानी बंद है उसके बारे में बताती है। गोधन आता है और पंचलैट जला देता है। गाँव के लोगों में खुशी की लहर दौड़ जाती है। सरदार गोधन के सात खून माफ कर

देता है। सारे प्रतिबन्ध हटा लिए जाते हैं। मुनरी की माँ गुलरी काकी रात के भोजन पर उसे आमंत्रित कर लेती है। गोधन व मुनरी का प्रेम फिर से हरा भरा हो जाता है।

पंचलाइट कहानी का उद्देश्य

'पंचालाइट' कहानी के लेखक फणीश्वरनाथ रेणु' जी हिन्दी – जगत् के सुप्रसिद्ध आंचलिक कथाकार हैं। 'पंचालाइट' भी बिहार के आंचलिक परिवेश की कहानी है। इस कहानी के द्वारा 'रेणु' जी ने ग्रामीण अंचल का वास्तविक चित्र खींचा है। गोधन के द्वारा पेट्रोमैक्स जला देने पर उसकी सभी गलतियाँ माफ कर दी जाती हैं; उस पर लगे सारे प्रतिबन्ध हट जाते हैं तथा उसे मनचाहा आचरण करने की छूट भी मिल जाती है।

इससे स्पष्ट होता है कि आवश्यकता बड़े-से-बड़े रूढिगत संस्कार और परम्परा को व्यर्थ साबित कर देती है। इसी केन्द्रीय भाव के आधार पर कहानी के एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य को स्पष्ट किया गया है।

इस प्रकार 'पंचलाइट' जलाने की समस्या और उसके समाधान के माध्यम से कहानीकार ने ग्रामीण मनोविज्ञान का सजीव चित्र उपस्थित कर दिया है। ग्रामवासी जाति के आधार पर किस प्रकार टोलियों में विभक्त हो जाते हैं और आपस में ईर्ष्या-द्वेष युक्त भावों से भरे रहते हैं, इसका बड़ा ही सजीव चित्रण इस कहानी में हुआ है। रेणु जी ने यह भी दर्शाया है कि भौतिक विकास के इस आधुनिक युग में भी भरतीय गाँव और कुछ जातियाँ कितने अधिक पिछड़े हुए हैं। कहानी के माध्यम से 'रेणु' जी ने अप्रत्यक्ष रूप से ग्राम- सुधार की प्रेरणा भी दी हैं।

पंचलाइट समीक्षा

पंचलाइट फणीश्वरनाथ 'रेणु' की आँचलिक कहानी है। ग्रामीण जीवन पर आधारित है। इसकी समीक्षा इस प्रकार है.

कथावस्तु / कथानक :-

इस कहानी में यह दर्शाया गया है कि किस प्रकार आवश्यकता बड़े-बड़े अवगुण या निषेध अथवा रूढ़िगत संस्कार को अनावश्यक सिद्ध कर देती है।

महतो टोली के लोग पंचलाइट खरीद तो लाते हैं, परन्तु जलाना नहीं जानते हैं। इस टोली के लिए यह अपमान की बात है। समस्या के समाधान के लिए मुमरी अपने प्रेमी गोधन जिसका हुक्का पानी बंद है उसके बारे में बताती है। गोधन आता है और पंचलैट जला देता है। गाँव के लोगों में खुशी की लहर दौड़ जाती है। सरदार गोधन के सात खून माफ कर

देता है। सारे प्रतिबन्ध हटा लिए जाते हैं। मुनरी की माँ गुलरी काकी रात के भोजन पर उसे आमंत्रित कर लेती है। गोधन व मुनरी का प्रेम फिर से हरा भरा हो जाता है।

पात्र तथा चरित्र-चित्रण :

प्रस्तुत कहानी के केन्द्र में अंचल या क्षेत्र विशेष है। कोई भी पात्र कहानी के केन्द्र में नही है। इसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं प्रमुख पात्र गोधन है। कहानी में सरदार, दीवान, मुनरी की माँ, गुलरी काकी, छड़ीदार, फुटँगी झा आदि एक वर्ग के पात्र है जबकि गोधन' एवं मुनरी दूसरे वर्ग के। लेखक ने ग्रामीण समूह के चरित्र को उभारने में सफलता प्राप्त हुई है।

कथोपकथन या संवाद :-

पंचलाइट' के संवाद सरल, रोचक, स्वाभाविक एवं पात्रानुकूल हैं। संवादो के माध्यम से ग्रामीण अंचल की रूढ़िवादिता, अज्ञानता पर प्रकाश डाला है। जैसे-

"मुनरी ने कनेली के कान में बात डाल दी कनेली-कनेली चिगो, चिध, चिन। कनेली मुस्कराकर रह गयी - गोधन तो बन्द है। मुनरी बोली तू कहे तो सरदार से गोधन जानता है पंचलाइट बालना।"

अत: संवाद पात्रानुकूल एवं स्वाभाविक है', संवादों में लेखक सफल रहा है।

देशकाल एवं वातावरण :-

रेणु की पंचलाइट कहानी ग्रामीण परिवेश की कहानी है। बिहार के ग्रामीण अंचल का चित्र प्रस्तुत किया गया है, ग्रामीणों के आचार-विचार एवं 'अन्धविश्वासों का भी चित्रण हुआ है।

भाषा-शैली : इस कहानी की भाषा बिहार के ग्रामीण अंचल में बोली जाने वाली 'जन भाषा है। जैसे- "एक नौजवान ने आकर सूचना दी राजपूत टोली के लोग - हंसते हँसते पागल हो रहे हैं। कहते हैं, कान पकड़कर पंचलैट के सामने पाँच बार उठो-बैठो तुरन्त जलने लगेगा।"

उद्देश्य:- रेणु जी ने इस कहानी में यह प्रेरणा दी है कि आवश्यकता बड़े-बड़े रूढिगत संस्कारों को भी अनावश्यक बना देती है। जैसे गोधन के एक गुण के कारण सारे प्रतिबंध हटा दिए जाते हैं।

शीर्षक: -

कहानी कला के तत्वों के आधार पर पंचलाइट एक सफल कहानी सिद्ध होती हैं। सारी घटनाएँ पंचलाइट के इर्द गिर्द घूमती है। अत: शीर्षक का नामकरण सार्थक सिद्ध होता है।

बहादुर कहानी का सारांश/कथावस्तु

दिलबहादुर से बहादुर बनना

दिलबहादुर 12-13 साल का पहाड़ी नेपाली लड़का पिता युद्ध में मारे गये माता गुस्सैल स्वभाव की है। और माँ की मार के कारण भागकर एक मध्यम वर्गीय परिवार में नौकरी कर ली, जहाँ गृहस्वामिनी निर्मला बड़ी उदारता से दिलबहादुर से नाम केवल बहादुर कर देती है।

परिश्रमी एवं हँसमुख बहादुर

बहादुर ईमानदार एवं परिश्रमी लड़का है, वह पूरे घर की साफ-सफाई के साथ-साथ सभी सदस्यों की जरूरतों का भी खयाल रखता है। उसके रहते सभी सदस्य कामचोर, आलसी एवं आरामतलबी हो गये हैं। हँसना और

हँसाना उसकी आदत बन गयी है। सोते वक्त रात में अवश्य कोई न कोई गाना गुनगुनाता है।

किशोर की बदतमीज़ी

शान शौकत एवं रौब से रहने वाला किशोर निर्मला का बड़ा लड़का है। अपने सारे काम बहादुर को सौप रखे हैं। छोटी-छोटी बात पर 'बहादुर को गाली देने से भी नहीं चूकता है। मौका पड़ जाए तो पीट भी देता है। बहादुर पिटाई पाकर भी कोने में ही बड़ी देर खड़ा हो जाता है। एक दिन किशोर ने उसे 'सुअर का बच्चा' कह दिया जिससे उसके स्वाभिमान को ठेस पहुँची। किशोर का काम करने को मना कर दिया। पूछने पर उत्तर दिया-"बाबूजी भैयाा ने मेरे मरे बाप को क्यों लाकर खड़ा कर दिया?"इतना कहकर वह रो पड़ा।

निर्मला के रिश्तेदार द्वारा चोरी का आरोप

निर्मला के व्यवहार में भी कुछ परिवर्तन आने लगा था। बहादुर के लिए उसने रोटियाँ सेकनी बन्द कर दी। स्वयं सेंककर खाये। एक दिन निर्मला के घर रिश्तेदार आए। उन्होंने चाय नाश्ते के दौरान ग्यारह रु० चोरी होने की बात कही। सबने बहादुर पर शक किया । लगातार बहादुर के मना करने पर भी उसे डराया, धमकाया, पीटा चूंकि बहादुर पर इल्जाम झूठा था लेखक ने भी उसे एक चाँटा मारा।

घरवालों का बहादुर के प्रति कटु व्यवहार

इस घटना के बाद बहादुर खिन्न रहने लगा। सभी उसे कुत्ते की तरह दुत्कारने लगे। वह समझ गया कि घर वाले उसके प्रति उदार नहीं है। वह बड़ी बेचैनी और घबराहट महसूस करने लगा।

बहादुर का घर से भागना

एक दिन उसके हाथ से सिल छूटकर गिर गया। दो टुकड़े हो गए। पिटाई के डर से वह घर से भाग गया। अपना सारा सामान वहीं छोड़ गया। किशोर को अब उसकी ईमानदारी पर विश्वास हो गया था और वे सभी

यह भी जानते थे कि रिश्तेदारों ने उसे झूठा इल्जाम लगाया था। अन्त में वे सभी पश्चाताप करने लगे।

बहादुर कहानी उद्देश्य

बहादुर कहानी के लेखक सुप्रसिद्ध कथाकार अमरकान्त हैं। इनकी 'बहादुर' कहानी मध्यमवर्गीय परिवार में नौकरी करने वाले बहादुर नाम के पहाड़ी लड़के पर आधारित एक रोचक, सुगठित, संक्षिप्त तथा समस्यामूलक कहानी है।

इस कहानी में बताया गया है कि मात्र पूँजीपति ही श्रम का शोषण नहीं करते, वरन् सामान्य मध्यम-वर्ग भी इस कुकृत्य में पीछे नहीं है।

इस कहानी का उद्देश्य समाज में उत्पन्न वर्ग-संघर्ष को मानवीय सहानुभूति द्वारा समाप्त करने का सन्देश देना है।

शोषितों के प्रति मानवता एंव प्रेम का व्यवहार, ऊँच-नीच के भेद के कारण दिलों में पड़ी दरार को भर देता है। बहादुर भी मानवीय स्नेह एवं संवेदनाओं का भूखा है। मालिक द्वारा पीटे जाने और प्रतिक्रिया स्वरूप उसके द्वारा घर छोड़ दिये जाने पर परिवार के सभी लोगों को पश्चात्ताप का अनुभव होता है। वे स्वयं को दोषी महसूस करते हैं। धनी और निर्धन का वर्ग-भेद मानवीय भावनाएँ ही कम कर सकती हैं। लेखक का मुख्य उद्देश्य दोनों के हृदयों का परिवर्तन है

और सबके प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार बनाये रखने का सन्देश देना है।

बहादुर कहानी की समीक्षा

कथावस्तु/सारांश

बहादुर कहानी के लेखक अमरकान्त जी हैं इस कहानी में बहादुर नाम के बेसहारा लड़के की मार्मिक कहानी चित्रित है। कहानी कला के तत्वों के आधार पर बहादुर कहानी की समीक्षा इस प्रकार है–

1.शीर्षक–सम्पूर्ण कथा बहादुर पात्र के आस–पास घूमती है। अतः कहानी का शीर्षक 'बहादुर' संक्षिप्त, सार्गर्भित एवं उपयुक्त है।

2.कथानक/कथावस्तु/सारांश–बहादुर कहानी बारह–तेरह वर्ष के पहाड़ी लड़के की दयनीय दशा को प्रकट करती है। बहादुर माँ की मार और उपेक्षा से परेशान होकर शहर की ओर भाग आता है।
और मध्यवर्गीय परिवार से सम्बंधित निर्मला के यहाँ नौकरी करता है। निर्मला लेखक की पत्नी है। बहादुर बड़ी मेहनत और इमानदारी से काम करता है। निर्मला के बेटे किशोर का भी सारा काम करता है। परन्तु मालकिन उस पर सदा अविश्वास करती हैं। उसे डाटती फटकारती रहती है। किशोर भी उस पर कभी–कभी हाँथ उठा देता है। एक दिन निर्मला उसे रोटी नहीं देती है और स्वंय बनाने को कहती है। इससे बहादुर दुःखी होता है। बार–बार पिटने और धमकाए जाने की वजह से बहादुर से भी त्रुटियाँ हो जाती हैं। एक दिन निर्मला एव के यहा कोई सम्बन्धी आये,

जिनके ग्यारह रूपये खो गये। सन्देह में बहादुर को क्रूरता के साथ पीटा गया। बहादुर अपना सभी सामान छोंड़कर भाग गया। तब निर्मला एवं उसके पति को उपनी गलती का अहसास हुआ और पश्चात्ताप भी। यही कहानी का मूल सारांश है।

3.पात्र तथा चरित्र-चित्रण-कहानी में पात्रों की संख्या सीमित है। इसमें केवल चार पात्र प्रमुख हैं-बहादुर, निर्मला, उसका पति और पुत्र किशोर। ये सभी पात्र मध्यम वर्ग के प्रतिनिधि हैं। बहादुर इसका सर्वप्रमुख पात्र

4.संवाद-योजना-आलोच्य कहानी के कथोपकथन संक्षिप्त, रोचक तथा गतिशील हैं। संवाद कथानक को आगे बढ़ाते हैं, पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालते हैं।

5. देश-काल और वातावरण–कहानी की रचना देशकाल को ध्यान में रखकर हुई है। अतः इसमें वातावरण का प्रभावशाली रूप दिखाई पड़ता है। सम्पूर्ण घटना निर्मला के घर में घटित होती है।

6.भाषा-शैली–कहानी में सामान्य लोगों की चलती हुई व्यावहारिक भाषा का प्रयोग किया गया है। कहानी की भाषा वक्रता तथा घुमाव-फिराव से सर्वथा दूर सरल तथा स्वाभविक है। इसमें उर्दू के प्रचलित शब्दों, दुहरे शब्दों, मुहावरों आदि का यथास्थान प्रयोग करके उपयुक्त वातावरण की सृष्टि की गयी है।

7.उद्देश्य–

इस कहानी का उद्देश्य समाज में उत्पन्न वर्ग-संघर्ष को मानवीय सहानुभूति द्वारा समाप्त करने का सन्देश देना है। शोषितों के प्रति मानवता एंव प्रेम का व्यवहार, ऊँच-नीच के भेद के कारण दिलों में पड़ी दरार को भर देता है।बहादुर भी मानवीय स्नेह एवं संवेदनाओं का भूखा है।